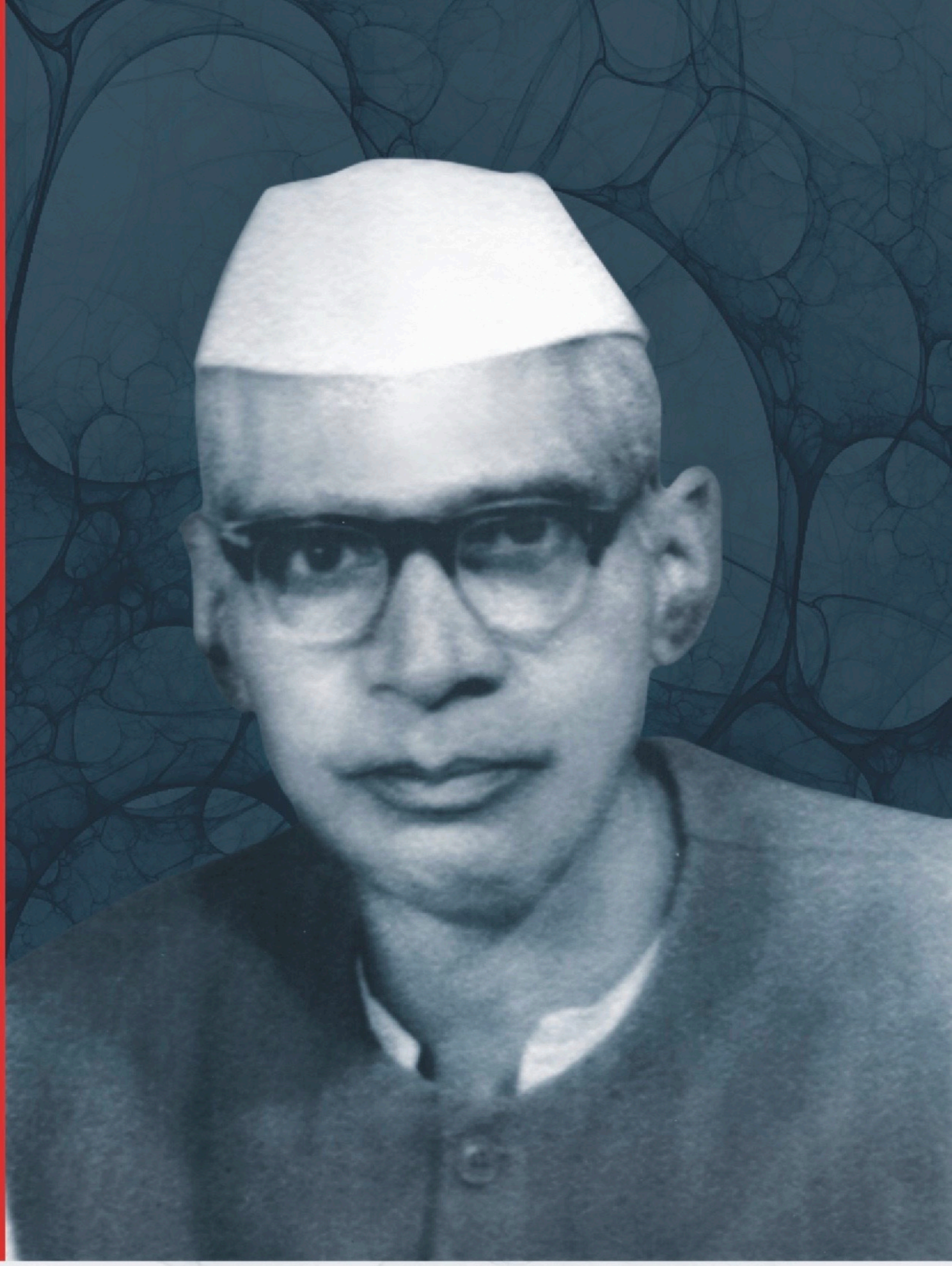

बनारसी प्रसाद भोजपुरी
रचनावली खण्ड-2

सम्पादक
अरविन्द कुमार

बनारसी प्रसाद भोजपुरी
रचनावली खण्ड-2

जीवन वृत्त

बनारसी प्रसाद भोजपुरी का जन्म भोजपुर के बड़हरा ग्राम के एक किसान परिवार में 1904 ई. की आषाढ़ पूर्णिमा (27 जुलाई) को हुआ था। आपके पिता मुंशी रामवरण लाल उस इलाके के खाते-पीते किसान माने जाते थे। आपका विवाह सन् 1920 ई. में मटुकपुर, भोजपुर निवासी मुंशी राजदीप सहाय की कन्या नन्दरानी देवी के साथ हुआ था।

आपके साहित्य अनुष्ठान का प्रारम्भ सन् 1925 ई. में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा संचालित साप्ताहिक 'देश' के सम्पादकीय विभाग से हुआ। फिर आप पटना से ही प्रकाशित होने वाले अन्य पत्रों जैसे– 'जनक', 'नवशक्ति', 'नवराष्ट्र' के सम्पादकीय विभागों में रहे। इसके अलावे आपने 'सूर्य' और 'आर्य महिला'(बनारस) तथा 'ग्राम पंचायत' और 'स्वाधीन भारत'(आरा) जैसे महत्त्वपूर्ण पत्रों का सम्पादन किया। अपने जीवन के आखिरी लगभग पन्दह वर्षों में आप आरा नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष रहे तथा उसकी पत्रिका 'शोध' का सम्पादन किया।

आपके विवेचनात्मक निबन्ध सरोज, विशाल भारत, गंगा, कर्मवीर, योगी, हुंकार, बिजली, प्रताप, विद्यार्थी, पाटल, नयी धारा, सनातन धर्म, कल्याण, संतवाणी, ग्रामसेवक, हिन्दू पंच, मतवाला आदि पत्र-पत्रिकाओं में सन् 1921 ई. से ही प्रकाशित होते रहे।

आपकी कृतियों में 'समाज का पाप', 'गरीब की आह', 'अर्द्धांगिनी, 'हलवाहे का बेटा' (उपन्यास), 'दो प्राणी' (कहानी संग्रह), 'मेरे राम का फैसला', 'चांडाल चौकड़ी' (हास्य-व्यंग्य), 'जेल का साथी' (निबंध-संग्रह), भारतीय संत एवं धर्माचार्य' (शोध-ग्रंथ) तथा 'धुँधले चित्र' (संस्मरण एवं आत्मकथा) प्रमुख हैं।

आप साहित्यकार के साथ-साथ चिकित्सक भी थे। सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद आपने अपने को होमियोपैथिक और बायोकेमिक चिकित्सा के प्रति समर्पित कर दिया तथा आरा के होमियोपैथिक कॉलेज के संस्थापक प्राचार्य के रूप में दस वर्षों से अधिक समय तक अपनी सेवा दी। इसी बीच आपकी 'बायोकेमिक चिकित्सा' नामक एक पुस्तक भी प्रकाशित हुई।

आप साहित्यकार तथा चिकित्सक के अलावे आजादी की लड़ाई के सेनानी भी थे। सन् 1921 में महात्मा गाँधी की पुकार पर असहयोग आंदोलन में शामिल हुए। फिर जेल गये, पर जेल से छूटने के बाद पुनः एक स्वतंत्र राष्ट्र की परिकल्पना को साकार करने में लग गए। आपने सरकारी नौकरी तभी स्वीकार की जब देश आजाद हो गया। आपकी अंतिम यात्रा 13 दिसम्बर, 1988 ई. को नेहरू नगर, आरा स्थित अपने आवास में पूरी हुई।

बनारसी प्रसाद भोजपुरी
रचनावली खण्ड-2

सम्पादक
अरविन्द कुमार

अभिधा प्रकाशन
दिल्ली/मुजफ्फरपुर

नन्दरानी देवी की स्मृति को

खण्ड-2

अनुक्रम

उपन्यास

गरीब की आह **09**

अर्द्धांगिनी **183**

हास्य-व्यंग्य

चांडाल चौकड़ी **335**

मेरे राम का फैसला **405**

अन्य निबंध **469**

संस्मरण

धुंधले चित्र **485**

विविध **579**

गरीब की आह

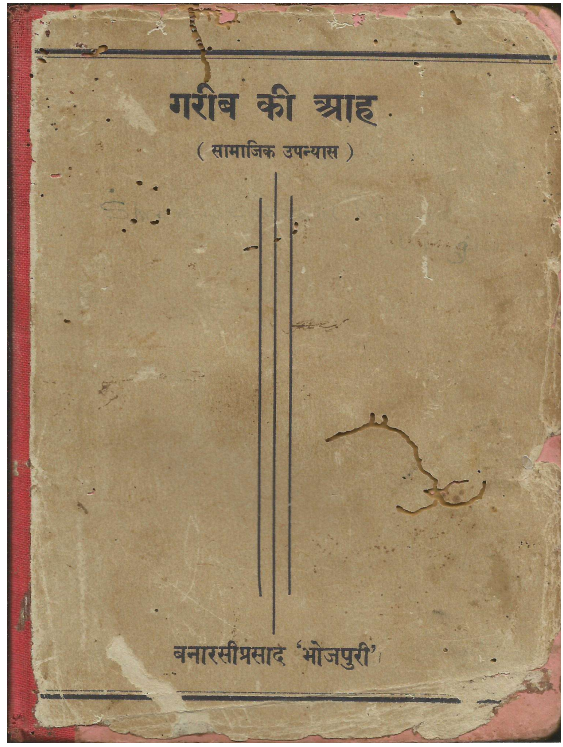

प्रकाशक
कला निकेतन, पटना- 4

प्रथम संस्करण
1952
मुद्रक : युगान्तर प्रेस, रमनाबाग, पटना

अपनी बात

समाज में जाति, धर्म और वर्ण का निर्माण हमने किया है, ईश्वर का इसमें जरा भी हाथ नहीं है। एक युग था, जब समाज के अगुओं ने समाज के कल्याण की भावना से जात-पाँत और धर्म की व्यवस्था आवश्यक बतायी। आज उस व्यवस्था में बहुत ही गड़बड़ी हो गयी है। नतीजा समाज को भोगना पड़ रहा है। इस वर्ण व्यवस्था की कैसे सराहना की जाय, जिसमें कुछ लोग अछूत बने बैठे हों और उनसे देह छुलाना पाप समझा जाता हो! जिस समाज में ऐसी विषमता और असमानता मौजूद हो, उसे संगठित और शक्तिशाली बनाने की कल्पना करना क्या हास्यास्पद नहीं है? समाज तभी संगठित हो सकता है, जब उसमें भ्रातृत्व की भावना की प्रधानता रहेगी। लेकिन यह तबतक सम्भव नहीं है जब तक छूआछूत का समूल विनाश नहीं हो जाता। मानव एक जाति है, और उसमें कोई भी भेद नहीं।

वैवाहिक सम्बन्ध हृदय का बन्धन है, एकीकरण है। जाति या धर्म की सीमा के अन्दर उसे सीमित रखने का अर्थ आन्तरिक भावनाओं की उपेक्षा करना है। सामाजिक नियम विवाह में स्वतन्त्रता नहीं देता। प्रस्तुत पुस्तक में समाज के युवकों और युवतियों ने जाति का बन्धन तोड़ कर पारस्परिक वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया है।

समाज में अमीर और गरीब का प्रश्न भी कम बीहड़ नहीं है। अमीर गरीब को रोटी देता है, और उसके बदले में न सिर्फ उसके रक्त का शोषण ही करता है, बल्कि उसकी प्रतिष्ठा को भी धूल में मिला देने की हिम्मत करता है। अमीर की निगाह में गरीब टुकड़ों का दास है, वह उस पर हर प्रकार का जुर्म कर सकता है, और गरीब को अपना दुःख सुनाने की इजाजत भी नहीं दे सकता। मुकुटबिहारी एक अमीर का लड़का है। शम्भु शर्मा उसका एक विश्वासी दोस्त है। शम्भु शर्मा उसके यहाँ नौकरी करता है। बस इसीलिए मुकुटबिहारी अपने मित्र की स्त्री के सतीत्व का हरण करने में संकोच नहीं करता। अमीरी में यही दुर्गुण है। पूँजीपति इसीलिए अनर्थ करने में हिचकते नहीं। फिर भी गरीब को स्वाभिमान है। वह अपने व्यक्तित्व की रक्षा करने के लिए दृढ़ है। रमियाँ इसका ज्वलन्त उदाहरण है। वह एक अछूत की लड़की है। शम्भु शर्मा उसे अपनाता है। वह उसकी संगिनी बन जाती है। लेकिन उसकी सुन्दरता पर मुकुटबिहारी रीझ जाता है, अपनी पूँजी के बल पर उसके सतीत्व का उपहास